पंचम अध्याय

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय – पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावनाः–

विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के साथ–साथ यह जानना बहुत आवश्यक है कि उनका विकास शैक्षिक एवं सहशैक्षिक प्रतिक्रियाओं में कितना हो रहा है। इसका अध्ययन करने के लिए विद्यार्थियो का सतत् एव व्यापक मूल्यांकन करना आवश्यक है। शिक्षा सतत् प्रक्रिया है जो जीवनपर्यन्त अनुभव के साथ चलती रहती है। अनुभव मापन में गुणात्मकता लाने एवं सर्वांगिण विकास करने हेतु शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नये–नये प्रयास किये जा रहे हैं। इनमें सी.बी.एस.ई. का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (परीक्षा सुधार) एक आमूलाग्र परिवर्तन है जो कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा शिक्षा के अधिकार में सर्व शिक्षा अभियान अंर्तगत शिक्षा का सार्वभैमिकरण एवं गुणात्मक विकास एक अभिनव उपक्रम रूप में चलाया जा रहा है। यह सी.सी.ई. का एक ऐसा प्रयास है जिसमें विद्यार्थियों का शाला के पहले दिन से लेकर आखरी दिन तक सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन होता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की विद्यार्थियों के विकास को बढ़ाने का एक प्रमुख बिन्दू माना गया है और उसे पूरा करने के लिए विद्यालयीन शिक्षकों की भूमिका अति महत्वपूर्ण होती है। इस प्रकार के मूल्यांकन में विद्यालयीन शिक्षकों को उनके विभिन्न विषयों में आने वाली अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा विद्यालयों में चलाये जा रहे सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में शिक्षको को उनके विभिन्न विषयों में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

5.2 समस्या कथन

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा विद्यालयों में चलाये जा रहे सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में शिक्षको को आने वाली समस्याओं का अध्ययन

5.3 शोध के उददेश्य

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा चलाये जा रहे सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में शिक्षको को विभिन्न विषयो में आने वाली समस्याओ का अध्ययन।
2. ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयो में शिक्षको को आने सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में आने वाली समस्याओ का अध्ययन।

5.4 शोध प्रश्न

1. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में सी.बी.एस.ई. विद्यालयीन शिक्षको को उनके विभिन्न विषयो में क्या क्या समस्याऐ आ रही है ?
2. ग्रामीण एवं शहरी सी.बी.एस.ई. विद्यालयो में शिक्षको को उनके विभिन्न विषयो में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में क्या क्या समस्याऐं आ रही है ?
3. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन संकल्पना के प्रति सतत एव व्यापक मूल्यांकन प्रशिक्षण प्राप्त विद्यालयीन शिक्षको की क्या समझ है ?

5.5 शोध की परिसीमाएँः-

यह अध्ययन वर्धा जिले (महाराष्ट्र राज्य) के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड संस्थाओ तक सीमित है जिसमें हमने वर्धा जिले के सी.बी. एस.ई. अंतर्गत विभिन्न विषयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में शिक्षको को आने वाली समस्याओ का अध्ययन करना है।

जिसमें

जिससे परिणाम की विश्वसनीयता पर सन्देह न किया जा सके। प्रस्तुत शोध में प्रदत्त का संग्रह करने के लिए स्वरचित/निर्मित व्यक्तिगत साक्षात्कार अनुसूची उपकरण का उपयोग किया गया।

5.8 शोध प्रविधिः–

शोध उपकरणो के प्रशिक्षण के लिए 10 दिन का समय निश्चित किया गया था। अनुसंधानकर्ता द्वारा 17 जनवरी से 4 फरवरी के दौरान मैदानी कार्य (फिल्ड वर्क) किया गया। अनुसंधानकर्ता ने प्रपत्रों की पूर्ति स्वयं सब विद्यालय में जाकर दोनो विद्यालायों के प्रधानाचार्य एवं उपप्रधानाचार्य के साथ मौखिक चर्चा करने के बाद विभिन्न विषयो के शिक्षको से व्यक्गित संपर्क द्वारा किया गया तथा प्रत्येक शिक्षको को व्यक्गित साक्षात्कार अनुसूची प्रारूप दिया गया। इसके लिये वर्धा जिले महाराष्ट्र राज्य के दो केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड विद्यालयो का चयन किया गया। प्रदत्तो के संकलन के लिए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान द्वारा एक समय सीमा निर्धारित की गई थी। शोधार्थी ने प्रत्येक एक विद्यालय में अलग–अलग निर्धारित तिथि, स्थान, समय पर विद्यालय में स्वयं जा कर प्रधानाचार्य एवं संस्था प्रधान से मिलकर बातचीत की और अपना परिचय देकर अपने आने का उद्देश्य बताकर शिक्षक–शिक्षिकाओं को लघुशोध प्रबंध विषय की जानकरी दी एवं शोधार्थी ने प्रत्येक एक विद्यालय में अलग एवं पूर्ण सहयोग हेतु व्यक्गित साक्षात्कार अनुसूची दे दी और साथ–साथ अध्याय से संबंधित कुछ सामान्य चर्चा भी की गई–

1. प्रदत्त जानकरी का उपयोग केवल शोध कार्य में ही किया जायेगा।
2. प्रदत्त जानकारी को गोपनीय रखा जायेगा।
3. कथन के उत्तर आपस में मित्रो से पूछकर देने के लिए सख्त मना किया गया था।
4. जो भी परीक्षण शिक्षको के ऊपर किया गया था, उसको उसी दिन लिया गया था।

लघुशोध के प्रदत्त संकलन हेतु प्रत्येक दो विद्यालयो के प्रधानाचार्यो एवं शिक्षको का पूर्ण सहयोग मिला।प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने गुणात्मक विधि का उपयोग करते हुए शोध में दिये गये प्रदत्त का विशलेषण किया।

5.9 परिणामः–

1. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति ज्यादातर विद्यालयीन शिक्षको नें उनके विभिन्न विषयों में आने वाली अनेक प्रकार की कठिनाईयों को महसूस किया तथा उन कठिनाईयों में समानता देखी गई।
2. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति महिला एवं पुरूष शिक्षकों ने भी उनके विभिन्न विषयों में आने वाली अनेक प्रकार की कठिनाईयों को महसूस किया तथा उनके कठिनाईयों में भी समानता देखी गयी।
3. सी.बी.एस.ई. के अर्न्तगत आने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में पढ़ा रहे शिक्षको को सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में उनके विभिन्न विषयों में आने वाली अनेक प्रकार की कठिनाईयाँ महसूस हुई तथा उनके कठिनाईयों में भी समानता का प्रभाव दिखाई दिया।
4. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन योजना के प्रति सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रशिक्षण प्राप्त विद्यालयीन शिक्षको की क्या समझ है इस बारे में ज्ञात किया गया।
5. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में कक्षा–8वीं व कक्षा–10वीं के शिक्षको द्वारा उनके विषयानुसार प्रयोग किये जाने वाले उपकरण व तकनीक में विभिन्न प्रकार की असमानता दिखाई दी।

5.10 सुझावः–

–सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की उपयोगिता का अध्ययन

–सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन से शिक्षको पर कार्य वृद्धि के प्रभाव का अध्ययन

–सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयो के शिक्षको को उनके विभिन्न विषयों में आने वाली समस्याओं का अध्ययन

–सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन से विद्यालयीन शिक्षक कहाँ तक सहमत हैं इस तथ्य का अध्ययन

5.11 भावी शोध हेतु सुझावः–

- सी.सी.ई. के विविध अध्ययन पद्धतियों का अवलम्ब करके उनके परिणामों का तुल्नात्मक अध्ययन कर सकते हैं।
- कक्षा–8वीं व कक्षा–10वीं स्तर के प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षको के सी.सी.ई. की समझ का अध्ययन किया जा सकता है।
- सी.सी.ई. योजना में विभिन्न विषयों के शिक्षकों को आने वाली कठिनाईयों का कक्षा अध्ययन पर प्रभाव एक अध्ययन किया जा सकता है।
- सी.सी.ई. नव उपक्रम से से बालकों पर उइने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- एन.सी.ई.आर.टी. और एम.एस.सी.ई.आर.टी. स्तर पर हो रहे सी.सी.ई. योजना कार्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।